हिन्दी भाषा के विकास में भारतेन्दुयुगीन पत्रकारिता का योगदान

डॉ॰ एकता रानी
पीएच॰डी॰,नेट हिंदी .
सहायक आचार्यएचौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय,सिरसा (हरियाणा) 125055

शोध आलेख सार

उन्नीसवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध हिन्दी भाषा और साहित्य के इतिहास में नवजागरण का काल माना जाता है। इसी समय हिन्दी भाषा को सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राष्ट्रीय अभिव्यक्ति का प्रभावी माध्यम बनाने के उद्देश्य से अनेक साहित्यकारों और पत्रकारों ने संगठित प्रयास किए। इस युग के अग्रदूत भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तथा उनके समकालीन साहित्यकारों ने पत्र–पत्रिकाओं को हिन्दी के प्रचार–प्रसार का सशक्त माध्यम बनाया।भारतेन्दुयुगीन पत्रिकाओं ने भारतीय समाज में व्याप्त सामाजिक विषमताओं, आर्थिक शोषण, सांस्कृतिक हीनभावना तथा औपनिवेशिक नीतियों के विरुद्ध जनमत तैयार किया। साथ ही इन पत्रिकाओं ने हिन्दी को राष्ट्र की साझा भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए निरन्तर वैचारिक अभियान चलाया। कविवचन सुधा, हरिश्चन्द्र मैगजीन, हरिश्चन्द्र चन्द्रिका, हिन्दी प्रदीप, सारसुधानिधि तथा उचित वक्ता जैसी पत्रिकाओं ने भाषा के परिष्कार, देवनागरी लिपि के प्रचार, स्वदेशी भावना के प्रसार तथा राष्ट्रीय चेतना के विकास में ऐतिहासिक भूमिका निभाई।

मूल शब्दः–नवजागरण, भाषा विकास, राष्ट्रीय चेतना, देवनागरी लिपि, हिन्दी पत्रिकाएँ, भाषा मानकीकरण, जनचेतना, भाषायी अस्मिता।

प्रस्तावना

हिन्दी भाषा के विकास का इतिहास अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक संघर्षों से होकर गुजरा है। मध्यकाल और औपनिवेशिक काल में प्रशासनिक एवं शासकीय स्तर पर विदेशी भाषाओं को प्राथमिकता मिलने के कारण हिन्दी को अपेक्षित सम्मान प्राप्त नहीं हो सका। मुगल शासन के दौरान फारसी तथा ब्रिटिश शासन में अंग्रेजी के प्रभाव ने हिन्दी के सार्वजनिक प्रयोग को सीमित कर दिया। यद्यपि हिन्दी व्यापक जनसमुदाय की व्यवहारिक भाषा थी, फिर भी उसे शासन, न्याय, शिक्षा तथा उच्च प्रशासन में उचित स्थान नहीं मिल पाया।

उन्नीसवीं शताब्दी में भारतीय समाज में नवजागरण की चेतना का विकास हुआ, जिसका प्रभाव साहित्य, समाज, शिक्षा और भाषा सभी क्षेत्रों पर दिखाई दिया। इसी काल में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नेतृत्व में हिन्दी भाषा के पुनर्जागरण का एक सशक्त आंदोलन प्रारम्भ हुआ। भारतेन्दु और उनके सहयोगियों ने यह अनुभव किया कि किसी भी राष्ट्र की उन्नति उसकी मातृभाषा के विकास पर निर्भर करती है। इसी विचारधारा के आधार पर उन्होंने हिन्दी को जनभाषा से राष्ट्रभाषा के स्तर तक प्रतिष्ठित करने के उद्देश्य से साहित्यिक एवं पत्रकारिक गतिविधियों को व्यापक रूप प्रदान किया। भारतेन्दु का प्रसिद्ध कथन, ''निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।''[1] इस युग की भाषा–दृष्टि का मूल आधार बन गया।

भारतेन्दुयुगीन पत्रकारों ने केवल साहित्य–सृजन तक अपने प्रयास सीमित नहीं रखे, बल्कि हिन्दी भाषा के पक्ष में जनमत निर्माण का व्यापक अभियान भी चलाया। उन्होंने भारतीय समाज से हिन्दी पुस्तकों के अध्ययन, लेखन तथा प्रचार–प्रसार का आह्वान किया। उनके निरन्तर प्रयासों का परिणाम यह हुआ कि हिन्दी को धीरे–धीरे शिक्षा संस्थानों, न्यायालयों तथा प्रशासनिक कार्यों में स्थान मिलने लगा। पंडित बालकृष्ण भट्ट ने भी स्पष्ट रूप से प्रतिपादित किया कि जिस भाषा को शासन का संरक्षण प्राप्त होता है, वही भाषा व्यापक रूप से विकसित होती है। उनके अनुसार जब तक हिन्दी को राजकीय कार्यों में सम्मानजनक

स्थान नहीं मिलेगा, तब तक उसका समुचित विकास संभव नहीं है।[2]भारत में हिन्दी पत्रकारिता का आरम्भ उस समय हुआ जब भारत पराधीन था। एक तरफ तो अंग्रेजों की दासता और दूसरी तरफ सामाजिक कुरीतियों का जाल। उस समय अनेक समस्याएं बुद्धिजीवी वर्ग के सामने थी। आरम्भ में सभी अंग्रेजों की राजनीति को भारत के लिए उचित समझते थे लेकिन 1885 में कांग्रेस जैसी संस्था के निर्माण के बाद अंग्रेजों की मनोवृत्ति से भारतीय अवगत हुए और कुछ शिक्षित।

भारतीयों ने भारत को दासता की बेड़ियों से छुड़ाने के लिए प्रयास आरम्भ कर दिए। लेकिन इसके लिए आवश्यक था कि पहले निज भाषा के माध्यम से सम्पूर्ण भारतवासियों को एकता के सूत्र में बांधा जाए तभी ब्रिटिश साम्राज्य से छुटकारा मिल सकता है। फलस्वरूप भारतेन्दु काल से हिंदी भाषा में साहित्य व पत्रकारिता को बढ़ावा दिया गया। उस समय अनेक ऐसी वार्षिक, छह मासिक, त्रैमासिक, मासिक, पाक्षिक पत्रिकाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ जिसने हिन्दी के प्रचार–प्रासर व विकास में योगदान दिया।

भारतेन्दुकालीन पत्रिकाएँ

कविवचनसुधा का प्रकाशन भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 1867 ई0 में काशी से आरम्भ किया। यह एक मासिक पत्रिका थी लेकिन कुछ समय बाद इसे पाक्षिक बना दिया गया। 'कविवचनसुधा' का उदय उस समय में हुआ था, जब लोग अंग्रेज अधिकारियों के समक्ष हाथ जोड़े खड़े रहते थे किंतु सुधा ने भारतीयों में एक नयी चेतना भरने का कार्य किया।'[3] कविवचन सुधा मुख्य रूप से साहित्यिक पत्रिका थी जिसने हिंदी साहित्य और भाषा के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। लेकिन पराधीनता काल में अंग्रेजी राजनीति का पर्दाफाश करने में भी इस पत्रिका की मुख्य भूमिका रही। 'पत्रकारिता में भारतेन्दु की दृष्टि राजनीतिक थी। वे इस पत्र के माध्यम से पाठकों को यूरोप के नये ज्ञान–विज्ञान से परिचित कराते थे।'[4] '12 जुलाई 1874 ई0 के अंक में एक लेख दिखाया गया है कि भारतवर्ष दिन–पर–दिन समृद्धिशाली नहीं होता जाता चीजें महंगी होती जाती हैं, गांवों में कपड़ा बुनने वालों के उद्योग चौपट होते जाते हैं, अखबार देश की दुर्दशा का वर्णन करते हैं, फिर भी टैक्स बढ़ते जाते है।'[5]

भारतेन्दु काल में अंग्रेजी और उर्दू का बोलबाला अधिक था और इन्हीं भाषाओं में पत्रिकाओं का प्रकाशन होता था, हिन्दी भाषा में समाचार पत्र पढ़ने वालों की संख्या बहुत कम थी। लेकिन इस पत्रिका के प्रकाशन के बाद हिंदी पढ़ने वालों की संख्या बढ़ने लगी जिसका प्रमाण 'बाबू बालमुकुन्द गुप्त के शब्दों में 'यद्यपि हिन्दी भाषा के प्रेमी उस समय बहुत कम थे तो हरिश्चन्द्र के ललित लेखों ने जी में ऐसी जगह कर ली थी कि 'कविवचनसुधा' के हर नम्बर के लिए लोगों को टकटकी लगाए रहना पड़ता था।'[6] इस पत्रिका ने स्वभाषा में भारतीयों को अंग्रेजी साम्राज्य की नीतियों से प्रभावित सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व धार्मिक परिस्थिति से अवगत करवाया। डॉ० रामविलास शर्मा के शब्दों में–'इसी पत्रिका में भारतेन्दु ने स्वदेशी वस्तुओं के व्यवहार के लिए अपना प्रतिज्ञापत्र छापा था, इसी में उन्होंने खानदेश के बाढ़–पीड़ितों की सहायता के लिए अपील छापी थी, इसी पत्रिका में उन्होंने अंग्रेजी शिक्षा, अंग्रेजी नीति का भंडाफोड़ किया था, इसी में उन्होंने हिन्दी के प्रचार और विकास के लिए आंदोलन किया था।'[7]

हरिश्चंद्र मैगजीन और हरिश्चंद्र चंद्रिका कविवचनसुधा के प्रकाशन के छह साल बाद भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने काशी से ही 15 अक्तूबर, 1873 ई० को हरिश्चन्द्र मैगजीन का प्रकाशन आरम्भ किया।

यह एक मासिक पत्रिका थी। इस पत्रिका में भी मुख्य रूप से साहित्यिक एवं राजनीतिक लेख प्रकाशित होते थे। लेकिन 'भारतेन्दु हास्य विनोद के लेखक से लेकर विज्ञान और पुरातत्व तक सभी सामग्री अपनी पत्रिका में देना चाहते थे। उस समय के पत्रों की यह एक सामान्य विशेषता थी कि पाठकों को सभी विषयों से थोड़ा बहुत परिचित कराने के लिए उनमें कई तरह के लेख प्रकाशित किए जाते थे।'[8]कुछ समय बाद हरिश्चन्द्र मैगजिन का नाम बदलकर 'हरिश्चन्द्र चंद्रिका' कर दिया गया लेकिन राजनीतिक समाचारों के छपने के कारण कविवचन सुधा व चंद्रिका को सरकार का समर्थन मिलना बन्द हो गया जिसके फलस्वरूप

चंद्रिका के प्रकाश में बाधा उत्पन्न हो गई। डॉ० वंशीधर के अनुसार, 'चंद्रिका में भाषा–संबंधी आंदोलन की चर्चा विशेष रूप से होती थी। हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में इस विषय पर लेख होते और दूसरे विद्वानों के भी मत उद्धृत किए जाते थे।[9] हरिश्चन्द्र मैगजीन के महत्त्व को दर्शाते हुए डॉ० रामविलास शर्मा ने कहा कि 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका ने साहित्य और पत्रकारिता के माध्यम से राष्ट्रीय सम्मान की भावना जगाने, साहित्यिक रूचि फैलाने, हिन्दी साहित्य के विभिन्न अंगो को समृद्ध करने और हिंदी भाषा को देश के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में उचित स्थान दिलाने के लिए संघर्ष में प्रशंसनीय काम किया।[10]

हिन्दी प्रदीप : 'हिन्दी प्रदीप' पत्रिका का प्रकाशन पंडित बालकृष्ण भट्ट द्वारा 1 सितम्बर 1877 को आरम्भ हुआ। यह एक मासिक पत्रिका थी। इस पत्रिका में भी अनेक विषयों जैसे विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, व्यंग्य,

सारसुधानिधि भारतेन्दु युग की प्रसिद्ध पत्रिका है जिसका प्रकाशन 13 जनवरी 1879 ई0 को आरम्भ हुआ। यह पत्रिका कलकता से प्रकाशित होती थी। यह एक लोकपरक पत्रिका थी जिसमें तत्कालीन लोकजीवन और देश दशा का बहुत ही यथार्थ चित्रण होता था। इस पत्रिका में राजनीति, समाजनीति, धर्म, भाषा, स्वास्थ्य, साहित्य आदि के प्रमुख समाचार रहते थे लेकिन इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषा को महत्त्व देना था जिसकी पुष्टि पत्रिका के प्रथम अंक से हो जाती है, 'सारसुधानिधि' के प्रथम अंक में उसका प्रयोजन छापा था, जो इस प्रकार है–'जब तक देश की भाषा उन्नत नहीं होती, तब तक तो सम्पूर्ण उन्नति को कौन पूछता है क्रमोन्नति भी नहीं होती। हिन्दुस्तान की प्रधान हिन्दी भाषा की ये दशा है कि बहुत तो जानते ही नहीं है कि हिन्दी किसे कहते हैं और हिन्दी लिखने वालों की संख्या अत्यन्त ही कम है। विशुद्ध हिन्दी भाषा को सर्वोदयेन करना आवश्यक है जिसमें कि थोड़े दिनों के बाद हिंदी भी संस्कृत और अंग्रेजी जैसा आशानुरूप फल प्रसव करे। इसलिए यथार्थ हिन्दी भाषा का प्रचार करना और हिन्दी लिखने वालों की संख्या वृद्धि करना सारसुधानिधि का दूसरा प्रयोजन है।

निष्कर्ष

हिन्दी प्रदेश में हिन्दी नवजागरण का कार्य भारतेन्दु काल में आरम्भ हुआ। इससे पहले साहित्यिक क्षेत्र में ब्रजभाषा और राजनीतिक व प्रशासनिक क्षेत्र में उर्दू और अंग्रेजी अपने पैर जमाये हुई थी। हिन्दी को निम्न स्तर की भाषा माना जाता था। लेकिन भारतेन्दु काल के कवियों व पत्रकारों के द्वारा भारतीय जनसमूह द्वारा बोली व समझी जानी वाली भाषा की साहित्य और पत्रिकाओं में स्थान दिया जाने लगा। विभिन्न पत्रिकाओं जैसे कविवचनसुधा, हरिश्चन्द्र मैगजीन, आनन्द कादंबिनी, नागरी नीरद, ब्राह्मण, हिन्दी प्रदीप, सारसुधानिधि आदि ने हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार और विकास में योगदान दिया। इन पत्रिकाओं में छापा जाता था कि जब तक हिन्दी राजभाषा व राष्ट्रभाषा नहीं बनती तब तक भारतीयों में राष्ट्रीयता की भावना जागृत नहीं की जा सकती। देश को स्वतन्त्रता के लिए राष्ट्रभाषा का व्यवहार बहुत ही आवश्यक है।

संदर्भ सूची

1. डॉ० वंशीधर, भारतेन्दु युगीन हिन्दी पत्रकारिता, पृ050
2. वही, पृ049
3. वही, पृ0138
4. वही, पृ0138
5. वही, पृ0138
6. रामविलास शर्मा, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और हिंदी नवजागरण की समस्याएँ, पृ095
7. वही, पृ095 8. डॉ० वंशीधर, भारतेन्दु युगीन हिंदी पत्रकारिता
9. वही, पृ0141
10. डॉ० रामविलास शर्मा, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और हिंदी नवजागरण की समस्याएं, पृ0101